Journal
of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda
Group 1
ISSN: 0030-5324
UGC CARE

पंजाबी लोक संगीत पर बदलती परिस्थितियों के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. मनप्रीत सिंह
सहायक प्रोफेसर
गुरु नानक कॉलेज, बुढलाडा

शोध सारांश

लोक संगीत उतना ही पुराना माना जाता है, जितना कि मनुष्य का अस्तित्व। जहाँ आम लोग अपने मनोरंजन और भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए संगीत को प्रमुखता देते थे, वहीं भारतीय दर्शन में संगीत को ईश्वर प्राप्ति का एक साधन भी माना गया है। आरंभ में ईश्वर प्राप्ति के साधन के रूप में प्रयुक्त संगीत संभवतः लोक संगीत ही रहा होगा। बाद में संगीत को लिपिबद्ध किया गया और फलस्वरूप भारतीय संगीत का सैद्धांतिक स्वरूप सामने आया। लोक संगीत मानवीय संवेदनाओं का स्वतःस्फूर्त रूपांतरण है। किसी भी राष्ट्र की संस्कृति उस राष्ट्र के लोक साहित्य और लोक कलाओं में सन्निहित होती है। लोक संगीत किसी क्षेत्र विशेष की आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक स्थिति को प्रकट करता है। वस्तुतः ये परिस्थितियाँ ही लोकसंगीत की प्रकृति और दिशा निर्धारित करती हैं। इन परिस्थितियों के बदलने पर लोकसंगीत की दिशा भी बदल जाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में हम पंजाब की निरंतर बदलती परिस्थितियों के प्रभाव में पंजाबी लोकसंगीत में आए परिवर्तनों का अध्ययन किया गया है।

महत्वपूर्ण शब्दावली

विरासत, व्यापारीकरण, वैश्वीकरण, संस्कृति, उपलब्धता, व्यावसायिक पहलू, कलात्मक अभिरुचियों, सामाजिक परिस्थितियों

परिचय

यदि हम पंजाब की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर नज़र डालें तो पाते हैं कि पंजाब क्षेत्र की परिस्थितियाँ कभी एक जैसी नहीं रहीं। पंजाब हिमालय की जड़ों में बसा है। हिमालय से आने वाली नदियों और झरनों के जल ने पंजाब की भूमि को सिंचित किया है। परिणामस्वरूप यह भूमि सदैव उपजाऊ और हरी-भरी रही है। प्राकृतिक रूप से समृद्ध इस भूमि ने सदैव लुटेरों, हमलावरों और विदेशी आक्रमणकारियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। इन लुटेरों, हमलावरों, विदेशी आक्रांताओं के आक्रमणों के परिणामस्वरूप यहाँ की परिस्थितियाँ सदैव बदलती रही हैं। वर्तमान में ये परिस्थितियाँ वैश्वीकरण के प्रभाव में हैं। वैश्वीकरण के अंतर्गत परिस्थितियों में परिवर्तन किसी विशेष भौगोलिक इकाई तक सीमित नहीं हैं, बल्कि पंजाबी लोक संगीत में आए बदलावों ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया है। पूरी दुनिया की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परिस्थितियाँ बदल रही हैं। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप जहाँ जीवन के कई क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं, वहीं इसने क्षेत्रीय भेदों को भी लगभग समाप्त कर दिया है। वैश्वीकरण के कारण एक ऐसी विश्व संस्कृति अस्तित्व में आई है जिसकी कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि नहीं है। वास्तव में, यह प्राकृतिक परिवर्तन न होकर पूरी दुनिया पर थोपा गया परिवर्तन है। इसने पूरी मानव जाति को प्रभावित किया है। लोक संस्कृति लुप्त हो रही है। यह लोक संगीत ही है जो किसी विशेष संस्कृति के दर्शन को प्रतिबिम्बित करता है। जैसे-जैसे सांस्कृतिक परिस्थितियाँ बदलती हैं, लोक संगीत का स्वरूप भी बदलता जाता है। आज स्थिति यह है कि लोक संगीत न केवल बदल रहा है, बल्कि अपना अस्तित्व भी खोता हुआ प्रतीत हो रहा है। इसका प्रभाव लोक संगीत की तीनों विधाओं गायन, वादन और नृत्य पर समान रूप से पड़ा है।

Journal
of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda
Group 1
ISSN: 0030-5324
UGC CARE

विश्लेषण

पंजाबी कहावत है कि हर बारह कोह पर भाषा बदल जाती है। भाषा एक परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है जिसका अपना विशाल इतिहास होता है। लोक संगीत की विरासत भाषा से ही जुड़ी होती है। हर बारह कोह पर लोकगीतों में होने वाले परिवर्तन बहुत सूक्ष्म होते हैं, जिन पर हम ध्यान नहीं देते। लेकिन जैसे ही क्षेत्र बदलता है, संबंधित क्षेत्र के रहन-सहन, रीति-रिवाज, व्यवहार और लोक कलाएँ भी बदल जाती हैं। इसी प्रकार ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के कला रूपों में भी परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। लेकिन किसी विशेष क्षेत्र की विरासत को संरक्षित करने की जिम्मेदारी वहां के नागरिकों का प्राथमिक कर्तव्य है, जिसके प्रति हमारे नायक उदासीन रहे हैं। 'यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे संगीत विद्वानों ने प्राचीन काल से प्राप्त पूंजी को ही सुरक्षित रखने का प्रयास किया है, किन्तु यह प्रयास भी बिना सोचे-समझे किया गया है। अतः यह निरर्थक सिद्ध हुआ है। निरर्थक इसलिए क्योंकि विचार शक्ति के अभाव में इसमें दोष उत्पन्न हो गए हैं।[i]

हमारे सन्त कविओं ने भी लोक संगीत को अपनाया और प्रितिष्ठित किआ हैं, 'सन्त कविओं का प्रभाव लोक मानस को अभोभूत करता है सूरदास व तुलसीदास का वात्सल्य रस लोक गीतों के केंद्र में है सूरदास व तुलसीदास वात्सल्य रस को अलोकिक पर्यारती मानते हैं।[ii] यदि हम पंजाब के संदर्भ में देखें तो लोक शब्द का अर्थ ग्रामीण जीवन से लिया गया है। ग्रामीण जीवन में लोग अपनी दैनिक थकान दूर करने के लिए लोकगीतों का सहारा लेते हैं। वंझली, इकतारा, ढोल, चिमटा आदि वाद्यों की मधुर ध्वनि पर लोगों के कंठ स्वतः ही फूटने लगते हैं। हर्ष और उल्लास के अवसर पर लोगों के पैर स्वतः ही थिरकने लगते हैं। सम्पूर्ण वातावरण प्रसन्नता के वातावरण में नाच उठता है। 'अपनी जीविका के निर्वाह या पेट भरने के लिए एवं जीवन के तमाम अभावों को दूर करने के लिए अनेकों विद्याएं हैं; अनेकों प्रकार की चेष्टाएं हैं; किंतु मनुष्य की रिक्तता को पूर्ण करने के लिए तथा अपने अन्तरपुरुष को नाना प्रकार के रसों से आप्यायित, आप्लावित करने के लिए उसका साहित्य एवं कला है।[iii] लोक संगीत में शास्त्रीय नियमों की कोई कठोरता नहीं होती। व्याकरण नहीं होता। केवल भावों की सरल एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है। ' आज विकास के नए युग के साथ बहुत कुछ बदल रहा है। इस परिवर्तन का मुख्य कारण संगीत का बाजारीकरण है, जिसके लिए सम्पूर्ण समाज के साथ-साथ व्यापारी वर्ग भी समान रूप से उत्तरदायी है। प्रत्येक व्यक्ति की इंटरनेट आदि सुविधाओं तक पहुँच बाजार के अस्तित्व के कारण बाजारवाद का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर अत्यधिक पड़ा है। बदलते समय के साथ हमारे समाज की सोच और दृष्टिकोण बदल रहा है। 1960 के बाद लोक कलाकार भी अपनी कला बेचकर जीविकोपार्जन के उद्देश्य से बाजार में आए। जिससे व्यापारी वर्ग और कलाकारों दोनों को समान रूप से लाभ हुआ। आज जीवनशैली बदल गई है। पहले जीवन सादा और सादा था। लोक कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करके संतुष्ट हो जाते थे। आवश्यकताएं कम होने से जीवन आसान था। लेकिन आज स्थितियां बदल गई हैं। कम पैसे में जीवन कठिन हो गया है। लोक गायक मेलों और उत्सवों में अपनी प्रस्तुति देकर अपनी आजीविका चलाते थे, जिनकी लोकप्रियता लगातार कम होती जा रही है।

'भारतीय कला भारत के विचार, धर्म, तत्वज्ञान और संस्कृति का दर्पण है। भारतीय जीवन की विस्तृत व्याख्या कला के माध्यम से ही संभव हो पायी है। यहां के लोगों का जीवन कैसा था, उनके उनके विश्वास क्या थे, धर्म तत्वों के बारे में उन्होंने क्या सोचा था, उनकी उपासना विधि कैसी थी और उन्होंने क्या-क्या निर्माण किये, इसका जीता जागता लेखाजोखा भारतीय कला में सुरक्षितहै।[iv] समाज के मनोरंजन के साधन बदल गए हैं। वैश्वीकरण की परिघटना के कारण पूरे विश्व की संस्कृति एक हो

ISSN: 0030-5324
UGC CARE

गई है। परिणामस्वरूप, समाज की इस महत्वपूर्ण इकाई ने अन्य संस्कृतियों के प्रभाव को भी स्वीकार कर लिया है। इस परिघटना में समाज की वे इकाइयाँ प्रभावित हुईं जो किसी क्षेत्र विशेष से जुड़ी थीं। अब लोग पर्व-त्योहारों में जाकर लोक संगीत सुनने के बजाय घर बैठे ही टेलीविजन, कंप्यूटर, फोन आदि का उपयोग करके अपना मनोरंजन करने लगे हैं। परिणामस्वरूप, नई पीढ़ी लोक संगीत विधा से दूर होती गई है। नई पीढ़ी टेलीविजन और इंटरनेट पर परोसे जाने वाले मिश्रित गायन को ही लोक संगीत विधा मानने लगी है। परिणामस्वरूप, लोक गायकों का पारंपरिक संगीत विधाओं से दूर होना स्वाभाविक था। आज के बदलते परिवेश में अपनी कला का मूल्य न मिलना, उचित सम्मान न मिलना आदि कारणों से लोक संगीत विधाओं को पेशेवर रूप से प्रस्तुत करने वाले कलाकार अपनी कला से दूर होते जा रहे हैं।

किसी भी क्षेत्र का लोक संगीत उस क्षेत्र के सामाजिक जीवन का प्रतिबिंब होता है। 'आज का युग साहित्यिक क्रांति का युग है इसलिए लोकसाहित्य का अध्ययन भी विभिन्न परतों से किया जा रहा है। प्रत्येक समाज के मूल चरित्र और उसमें व्याप्त प्रवृत्तियों को समझने के लिए उस समाज की लोककथाओं को ठीक से समझना बहुत जरूरी है।'[iv] शहर के आगमन के साथ, शहर का रंग-रूप बदलने के साथ, लोक संगीत में भी बदलाव आया है। लोक संगीत पर बदलते परिवेश के प्रभाव के परिणामस्वरूप, उस क्षेत्र विशेष का व्यक्ति वर्तमान में अपनी संस्कृति से अनभिज्ञ है। युवा इस क्षेत्र में आना नहीं चाहते क्योंकि उन्हें युवा पीढ़ी के भविष्य में उपलब्धि का कोई ठोस साधन दिखाई नहीं देता।

बदलते दौर में लोकवाद्यों की लोकप्रियता में काफी कमी आई है। आज लोकवाद्यों में जनता की घटती रुचि और पुराने वाद्ययंत्रों की घटती उपलब्धता के कारण पारंपरिक वाद्ययंत्र लुप्त होते जा रहे हैं। आजकल लोकवाद्य बनाने वाले कारीगरों की संख्या में भी कमी आई है।

पारंपरिक लोक संगीत के क्षेत्र में गिरावट का एक अन्य कारण विशुद्ध रूप से पारंपरिक लोकसंगीत की मांग में कमी आना भी है। पारंपरिक वाद्ययंत्रों पर गाने वाले कलाकार आर्थिक रूप से लोकप्रिय गीत गाने वालों से पीछे रह जाते हैं। पेशेवर लोग अपनी आजीविका के लिए मजदूरी या कोई अन्य छोटा-मोटा काम करने लगे जिससे उनके पास संगीत साधना के लिए समय का अभाव होने लगा। इस प्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी लोक संगीत को अपनाने वाले लोग अपनी गौरवशाली विरासत से मुंह मोड़ने लगे।

आजकल लोक संगीत के नाम पर जो कुछ भी गाया जाता है वह व्यावसायिक पहलू को ध्यान में रखकर गाया जाता है न कि व्यक्ति अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए गीतों की रचना करता है। परिणामस्वरूप लोक संगीत की व्याख्या यहीं समाप्त हो जाती है। यही कारण है कि वर्तमान समय में रचा जा रहा संगीत लोक संगीत की कसौटी पर खरा नहीं उतर पाता और उच्च स्थान प्राप्त नहीं कर पाता। इस प्रकार लोक गीतों का मूल स्वरूप बदल गया है।

पारंपरिक रीति-रिवाजों का ह्रास भी लोक संगीत के पतन का एक महत्वपूर्ण कारण है। कई लोकगीत विशिष्ट अनुष्ठानों/कर्मकांडों से जुड़े होते हैं, जैसे जन्म गीत, मुंडन गीत, सगाई गीत, विवाह गीत, अंतिम संस्कार गीत आदि। ये अनुष्ठान भारतीय समाज से लगभग लुप्त हो चुके हैं। इनमें से अधिकांश अनुष्ठान पाश्चात्य रीति-रिवाजों का शिकार हो गए हैं। आजकल जन्मदिन मनाते समय पाश्चात्य गीत बजाए जाते हैं। सगाई, विवाह आदि में लोकगीतों का स्थान डीजे ने ले लिया है। जीवनशैली में बदलाव भी लोकसंगीत के लुप्त होने का एक महत्वपूर्ण कारण है। लोकगीतों के निर्माण की प्रक्रिया में अर्थव्यवस्था और समृद्धि रीढ़ की हड्डी की भूमिका निभाती है। आर्थिक रूप से समृद्ध समाज मानसिक स्तर पर अधिक प्रेरित होता है, फलस्वरूप वह कलात्मक अभिरुचियों की ओर अधिक

आकर्षित होता है। वर्तमान व्यवस्था अस्थिर है और अराजकता पैदा करती है। ऐसे वातावरण में लोककलाओं के निर्माण के लिए किसी के पास न तो समय है और न ही पूंजी। 'पन्ना लाल मदान श्री जगदीश नारायण पाठक को उद्धृत करते हुए लिखते हैं, आज के शास्त्रीय संगीतकारों की लोक संगीत के प्रति घृणा, संकीर्णता और पुराने विचारों से चिपके रहने की हठ, शास्त्रीय संगीतकारों के भविष्य को खतरे में डाल सकती है।'[vi]

मनोरंजन के साधनों में बदलाव भी लोकसंगीत को कहानियों, पहेलियों, लोक खेलों के रूप में प्रस्तुत करते रहते हैं। तप के रूप में कई छोटे-छोटे गीत हमारी स्मृति का हिस्सा बन जाते हैं। भंडा भंडारिया कीता कु वार एक मीठी चक लेह दिल तेरे, काली ईंटें काली सड़क रैन वर्षा दे जोरो जोर, दूब खराब्बी बकरी दबी उहदी छां चल मेरी बकरी कल वाली थान आदि अनेक ऐसे गीत रूप हैं जो आज भी अस्सी के दशक से पहले जन्मे लोगों की यादों को ताज़ा कर देते हैं। बदलती सामाजिक परिस्थितियों के कारण आज संगीत का यह रूप समाप्त हो गया है।

ऐसा बिल्कुल नहीं है कि बदलती परिस्थितियों के प्रभाव ने लोक कलाओं को सिर्फ ही नुकसान पहुंचाया है; इसके विपरीत, सभी लोक कलाओं ने अपने-अपने स्तर पर वैश्विक स्तर पर सम्मान प्राप्त किया है। ऐसी प्रस्थितिओं से निपटने और अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए देश के सभी नागरिकों को सतर्क रहने की जरूरत है। हमारी प्राचीन संस्कृतक संपत्ति को संभाला जा सके इसके लिए कुश सुझाव निष्कर्ष के रूप में निम्न लिखित अनुसार हैं।

निष्कर्ष

सरकार ने लाभकारी योजनाओं और पेंशन आदि की व्यवस्था की है। हालाँकि, संस्कृति और लोक संगीत के लिए कोई भविष्योन्मुखी योजना न होने के कारण लोक संगीतकारों को अपनी कला से दूरी बनानी पड़ रही है। इन लोक कलाकारों का यह कहना भी सही है कि लोक संगीत में पैसे की कमी के कारण उन्हें ऐसा काम करना पड़ता है जिससे वे अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकें। लोक कलाकारों का दुर्भाग्य रहा है कि आज तक सरकारी स्तर पर उनके लिए कोई योजना नहीं बनी।

लोक संगीत सहित अन्य सभी लोक कलाओं को जीवित रखना और पाश्चात्य संगीत को नई धुनों पर हावी न होने देना, लोक संगीत प्रेमियों के लिए एक बड़ी चुनौती है। लोकगीतों को पारंपरिक और गायन सांस्कृतिक महत्ता को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। नई धुनें बनाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनमें लोक संगीत की स्वाभाविकता बनी रहे और साथ ही, उनमें राष्ट्रीयता का भाव न हो।

आजकल पाश्चात्य परिधानों, वाद्ययंत्रों और नृत्य की बढ़ती लोकप्रियता का हमारे पारंपरिक परिधानों, नृत्यों और लोकगीतों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। आज हमारे पारंपरिक लोकगीतों, लोकवाद्यों और लोकनृत्यों को जीवित रखने के लिए आवश्यक कदम उठाने की सख्त आवश्यकता है।

सांस्कृतिक आयोजनों में लोक संगीत की बजाय मिश्रित संगीत या पाश्चात्य धुनों पर आधारित संगीत का प्रयोग भी लोक संगीत के पिछड़ने का एक कारण है। ऐसे आयोजनों में अक्सर फिल्मी धुनें ही छाई रहती हैं। लोक कलाकारों को प्रस्तुति के लिए आमंत्रित करने के बजाय, सीडी या कैसेट बजाकर काम चलाया जाता है। अगर लोक कलाकारों को आमंत्रित भी किया जाता है, तो उनका पारिश्रमिक इतना कम होता है कि वे मुश्किल से अपना गुज़ारा कर पाते हैं। सरकारी स्तर पर लोक संगीत को प्रोत्साहित करने से आम जनता की लोक संगीत में रुचि बनी रहेगी।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE

[i] पंजाब में संगीत कला का आरंभ एवं विकास, पन्ना लाल मदान, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1986 पृ. सं. 50

[ii] प्रो. चंद्ररेखा ढडवाल, जन्मेजय गुलेरिअ लोकभाव स्वांजलि भाग-१ , देस संगीत प्रकाशन, पृ. सं. 3

[iii] साहित्येर पथे, पुस्तक साहित्यतत्व निबन्ध (बंगाब्द 1340)

[iv] भारतीय सभ्यता संस्कृति एवं संगीत, अंजलि मित्तल, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, पृ. सं. 47

[v] पंजाबी लोक धारा(छठा पंजाबी विकास सम्मेलन), संपादक, पंजाबी विकास विकास विभाग, अमरजीत सिंह ढिल्लों, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1986 पृ. सं.177

[vi] पंजाब में संगीत कला का आरंभ एवं विकास, पन्ना लाल मदान, प्रकाशन ब्यूरो, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1986 पृ. सं. 52